डॉ. जेम्स एस. स्पीगल, ईसाई नैतिकता, सत्र 10, गर्भपात, भाग 1

© 2024 जिम स्पीगल और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 10, गर्भपात, भाग 1 है।

ठीक है, तो हमने प्रमुख नैतिक सिद्धांतों का अपना सर्वेक्षण पूरा कर लिया है। अब, आइए हम अपना ध्यान कई व्यावहारिक नैतिक मुद्दों की ओर मोड़ें।

इस दौरान, हम इनमें से प्रत्येक मुद्दे के पक्ष और विपक्ष में तर्कों को देखेंगे और विभिन्न तरीकों से उन नैतिक सिद्धांतों और अवधारणाओं को लागू करेंगे जिन पर हमने पहले ही इन विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की है। इसलिए, हम सबसे विवादास्पद मुद्दे से शुरुआत करने जा रहे हैं, और वह है गर्भपात पर बहस। मैं गर्भधारण के बारे में थोड़ी जैविक पृष्ठभूमि प्रदान करके शुरू करूंगा क्योंकि इस चर्चा में कुछ निश्चित शब्दों का उपयोग किया गया है, और यह समझना महत्वपूर्ण है कि उनका क्या अर्थ है।

तो, शुक्राणु द्वारा डिंब के निषेचन के बाद, युग्मनज का निर्माण होता है। और जैसे ही यह गर्भाशय में जाता है, यह ब्लास्टोसिस्ट बन जाता है। ब्लास्टोसिस्ट की एक छवि है।

मोटे तौर पर 3 से 8 सप्ताह तक, इसे भ्रूण के रूप में जाना जाता है। लगभग 3 1/2 सप्ताह के बाद, दिल धड़कना शुरू हो जाता है, जिसका पता लगभग 6वें सप्ताह में चलता है। 7वें सप्ताह में, मस्तिष्क की गतिविधि शुरू होती है, और इस बिंदु पर, इसे भ्रूण कहा जाता है।

लगभग 16वें सप्ताह में, तेजी आती है। यही वह समय होता है जब माँ अपने गर्भ में बच्चे की हलचल महसूस कर सकती है। और फिर, लगभग 24वें सप्ताह में, हम व्यवहार्यता तक पहुँच जाते हैं।

यही वह समय है जब बच्चा गर्भ के बाहर जीवित रह सकता है। तो फिर से, यहाँ एक ब्लास्टोसिस्ट की छवि है। यहाँ 3 से 4 सप्ताह के आसपास भ्रूण कैसा दिखता है। यह 7 1/2 सप्ताह का भ्रूण है।

10 सप्ताह. 3 महीने और 1 सप्ताह. 4 महीने.

6 महीने. 8 महीने और 3 सप्ताह. और ता-दा, मेरा बेटा एंड्रयू, जब वह, मुझे नहीं पता, 6 या 8 महीने का था.

तो अब, आइए गर्भपात की कुछ श्रेणियों पर ध्यान दें। गर्भपात के बारे में यहाँ सबसे बुनियादी अंतर गर्भावस्था की समाप्ति है। आम तौर पर, गर्भपात तब होता है जब गर्भावस्था समाप्त हो जाती है।

सबसे बुनियादी अंतर स्वतःस्फूर्त गर्भपात और बाह्य रूप से प्रेरित गर्भपात के बीच है। स्वतःस्फूर्त गर्भपात को गर्भपात भी कहा जाता है, और यह किसी नैतिक बहस या विवाद का स्रोत नहीं है। बेशक, विवादास्पद और बहस का विषय यह है कि गर्भपात बाह्य रूप से प्रेरित होने पर होता है।

यह विभिन्न तरीकों से किया जाता है, जिसमें वैक्यूम, एस्पिरेशन, फैलाव और क्युरेटेज, सलाइन इंजेक्शन, हिस्टेरोटॉमी, प्रोस्टाग्लैंडीन और मॉर्निंग-आफ्टर पिल शामिल हैं। जहाँ तक केंद्रीय दार्शनिक मुद्दों का सवाल है, दो मुख्य प्रश्न हैं। एक भ्रूण की ऑन्टोलॉजिकल स्थिति से संबंधित है।

जब हम भ्रूण, भ्रूण या ब्लास्टोसिस्ट के बारे में बात कर रहे हैं तो यह किस तरह की इकाई है? गर्भावस्था के दौरान हम जिस भी बिंदु पर बात कर रहे हों, हम पूछ सकते हैं कि यह किस तरह की इकाई है? क्या यह सिर्फ एक उपांग है, अपेंडिक्स या टॉन्सिल या एडेनोइड जैसा कुछ? क्या यह संभावित रूप से मानव है? क्या यह मानव है लेकिन केवल जैविक रूप से ऐसा है? एक जैविक मानव लेकिन एक व्यक्ति नहीं? या भ्रूण, यहां तक कि एक ब्लास्टोसिस्ट या युग्मनज, एक पूर्ण मानव व्यक्ति है? तो, भ्रूण की ऑन्टोलॉजिकल स्थिति के सामान्य प्रश्न के तहत ये अलग-अलग संभावनाएं हैं। फिर हम पूछते हैं, भ्रूण की नैतिक स्थिति क्या है? भ्रूण के पास क्या अधिकार हैं, यदि कोई हैं? और भ्रूण के प्रति हमारे क्या कर्तव्य या दायित्व हैं? उस प्रश्न या भ्रूण की नैतिक स्थिति के बारे में उन प्रश्नों का हमारा उत्तर ऑन्टोलॉजिकल प्रश्नों के हमारे पिछले उत्तरों द्वारा निर्धारित किया जाएगा। यही कारण है कि यह महत्वपूर्ण है कि हम पहले भ्रूण की स्थिति के बारे में ऑन्टोलॉजिकल प्रश्न को संबोधित करें।

कानूनी पृष्ठभूमि के बारे में थोड़ा सा: बेशक, 1973 का ऐतिहासिक निर्णय और सुप्रीम कोर्ट का निर्णय, रो बनाम वेड, लगभग 50 वर्षों से मार्गदर्शक कानूनी मिसाल रहा है। अदालत ने गर्भावस्था को तीन भागों, यानी विभिन्न तिमाहियों में विभाजित करके इस मुद्दे को संबोधित किया।

और फिर कुछ ऐसे नियम बनाए जो इन सभी तिमाहियों पर लागू होते हैं। गर्भाधान की पहली तिमाही के संबंध में, न्यायालय ने फैसला सुनाया कि राज्य गर्भपात को विनियमित नहीं कर सकते। दूसरी तिमाही के संबंध में, उन्होंने कहा कि राज्य इसे विनियमित कर सकते हैं, लेकिन केवल माँ के स्वास्थ्य के लिए।

तीसरी तिमाही के संबंध में, उन्होंने फैसला सुनाया कि राज्य उन गर्भपातों को छोड़कर किसी भी गर्भपात पर रोक लगा सकते हैं जो माँ के स्वास्थ्य के लिए आवश्यक हैं। अब, रो बनाम वेड के बाद से, कई अन्य निर्णय हुए हैं। दरअसल, उसी वर्ष, 1973 में, डो बनाम बोल्टन नामक एक और मामला था, जिसने वास्तव में रो को यह कहते हुए विस्तारित किया कि माँ के स्वास्थ्य में मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक चिंताएँ शामिल हो सकती हैं।

चार साल बाद, प्लान्ड पैरेंटहुड बनाम डैनफोर्थ मामले में, उन्होंने फैसला सुनाया कि माता-पिता या पति-पत्नी की सहमति की कोई आवश्यकता नहीं है। इस फैसले ने गर्भवती माँ और उसके चिकित्सक पर निर्णय छोड़ दिया। 1989 में, वेबस्टर बनाम रिप्रोडक्टिव हेल्थ सर्विसेज मामले में,

मिसौरी कानून को बरकरार रखा गया था, जिसमें गर्भधान से जीवन की शुरुआत को परिभाषित किया गया था।

इस फ़ैसले ने गर्भपात के लिए सार्वजनिक वित्तपोषण पर भी रोक लगा दी। तीन साल बाद, प्लान्ड पैरेंटहुड बनाम केसी मामले में, पेंसिल्वेनिया के एक कानून को बरकरार रखा गया, जिसमें गर्भपात में शामिल विभिन्न जोखिमों के बारे में महिला को सूचित करने के लिए 24 घंटे की प्रतीक्षा अवधि की बात कही गई थी। इसने माता-पिता की सहमति की आवश्यकता को भी बरकरार रखा, लेकिन पति-पत्नी की अधिसूचना की आवश्यकता को खारिज कर दिया।

तो ये गर्भपात से संबंधित रो बनाम वेड से जुड़े सुप्रीम कोर्ट के कुछ प्रमुख मामले हैं। इसलिए, हमें यहां नैतिक और कानूनी मुद्दों के बीच अंतर करने की आवश्यकता है। यह उन चीजों में से एक है जो गर्भपात की बहस को इतना जटिल और कठिन बनाती है कि हमारे पास इस मुद्दे के ये दो आयाम हैं।

और कानूनी सवाल यह है कि क्या इस देश में किसी महिला को गर्भपात का विकल्प चुनने का कानूनी अधिकार होना चाहिए? और नैतिक सवाल यह है कि क्या यह कानूनी है या नहीं, अगर कभी, तो क्या किसी महिला के लिए गर्भपात करवाना नैतिक रूप से उचित है? इसलिए, कोई व्यक्ति नैतिक रूप से या कानूनी रूप से प्रो-लाइफ या प्रो-चॉइस हो सकता है। बहुत से लोग नैतिक अर्थों में प्रो-लाइफ हैं और उनका मानना है कि किसी महिला को गर्भपात का विकल्प चुनने का अधिकार नहीं होना चाहिए, इसलिए वे कानूनी अर्थों में भी प्रो-लाइफ होंगे। बहुत से लोग नैतिक रूप से और कानूनी रूप से प्रो-चॉइस हैं।

और फिर कुछ लोग नैतिक रूप से जीवन के पक्षधर हैं लेकिन कानूनी रूप से चुनाव के पक्षधर हैं। इसलिए, यह सिर्फ़ उन विचारों के संदर्भ में थोड़ा जटिल हो जाता है जो कोई रख सकता है। हम नैतिक प्रश्न पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

और आपके राजनीतिक रुझान के आधार पर, कानूनी प्रश्न पर इसका प्रभाव पड़ भी सकता है और नहीं भी। तो, आइए कुछ प्रमुख प्रो-चॉइस, नैतिक प्रो-चॉइस तर्कों के बारे में बात करके शुरू करें जो दिए गए हैं। प्रो-चॉइस दृष्टिकोण के पक्ष में संभवतः दो सबसे प्रसिद्ध तर्क जूडिथ जार्विस थॉम्पसन और मैरी एन वॉरेन द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं।

तो, आइए जूडिथ जार्विस थॉम्पसन के तर्कों से शुरू करें, जो अद्वितीय और बहुत ही अभिनव हैं। मैरी एन वॉरेन के विपरीत, जिनके बारे में हम आगे बात करेंगे, थॉम्पसन तर्क के लिए यह मानते हैं कि भ्रूण पूरी तरह से एक मानव व्यक्ति है। आइए हम यह मान लें कि भ्रूण एक व्यक्ति है और केवल जैविक रूप से मानव नहीं है।

क्या इसका मतलब यह है कि हमें भ्रूण को भी वही नैतिक अधिकार देने होंगे जो किसी भी वयस्क मानव को दिए जाते हैं? और उनका तर्क है कि नहीं। उन्होंने कुछ दिलचस्प विचार प्रयोगों के माध्यम से इस मुद्दे पर हमारे अंतर्ज्ञान को बढ़ाने की भी कोशिश की। और इनमें से एक प्रयोग वायलिन वादक के बारे में है।

थॉम्पसन एक बहुत प्रसिद्ध विचार प्रयोग का उपयोग करते हैं। तो, मान लीजिए कि आप एक दिन खुद को अस्पताल में पाते हैं, और आप एक ऐसे व्यक्ति से जुड़ जाते हैं जो आपके बगल में बिस्तर पर लेटा हुआ है। और आपको पता चलता है, आपको बताया जाता है कि आपको बेहोश कर दिया गया था, अपहरण कर लिया गया था, और उस व्यक्ति का समर्थन करने के लिए इस्तेमाल किया गया था जो आपके बगल में है और जिसे एक दुर्लभ रक्त रोग है, जिसके उपचार में केवल आपका विशेष रक्त समूह ही सहायक हो सकता है।

और इसलिए, वे आपको एक तरह की जीवन रक्षक मशीन के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं क्योंकि आप इस व्यक्ति से जुड़े हुए हैं जो एक विश्व प्रसिद्ध वायलिन वादक है। सोसाइटी फॉर म्यूज़िक लवर्स ने ही इसकी व्यवस्था की थी क्योंकि वे इस महान वायलिन वादक को खोना नहीं चाहते थे जो आपके रक्त के मामले में शारीरिक रूप से आपके विशेष समर्थन के बिना, कुछ ही हफ्तों या महीनों में मर सकता था। इसलिए, उन्होंने ऐसा करने का फैसला किया क्योंकि शायद आपने अपनी सहमति नहीं दी होती।

लेकिन अब जब आप इस व्यक्ति से जुड़ गए हैं, तो वे कहते हैं कि आपको बस नौ महीने तक इस स्थिति में रहने की ज़रूरत है, और फिर आप जाने के लिए स्वतंत्र हैं। फिर, वह विशेष प्रसिद्ध वायलिन वादक अपने जीवन के बाकी हिस्से को अपने संगीत कौशल से अन्य लोगों के जीवन को समृद्ध करने में बिता सकता है। अब, इस स्थिति में आपकी प्रतिक्रिया क्या होगी? क्या आप कहेंगे, ठीक है, यह समझ में आता है?

मैं बस यहीं बैठूंगा और हफ्तों और महीनों तक इंतज़ार करूंगा। शायद नहीं। शायद आपका जवाब होगा, एक मिनट रुको, किसी ने मुझसे नहीं पूछा।

मैंने इसे नहीं चुना। इसलिए, आप मुझे नौ महीने तक इस असुविधा और परेशानी से नहीं गुज़रने दे सकते, जबकि, ठीक है, वायलिन वादक समाज का एक मूल्यवान सदस्य है और मेरे जितना ही एक इंसान है। मैं खुद को इससे अलग करने जा रहा हूँ।

क्षमा करें, लेकिन आप मुझे ऐसा करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। अब, थॉम्पसन का कहना है कि यह गर्भापात के समान है, जहाँ, फिर से, भले ही हम यह मान लें कि यह एक व्यक्ति है, फिर भी आपको उस मामले में खुद को अलग करने का अधिकार है। हम यह मान सकते हैं कि भ्रूण अधिकारों के साथ एक पूरी तरह से व्यक्तिगत मानव प्राणी है और इसी तरह।

इस मामले में यह आपकी अपनी स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के अधिकार को कम नहीं करता है। इसलिए, वह तर्क देती है कि उस सादृश्य से हमें यह पता चलना चाहिए या पता चलना चाहिए कि सभी भ्रूणों को जीवन का अधिकार नहीं है जो यह अनिवार्य करेगा कि एक महिला अपनी गर्भावस्था जारी रखे, भले ही वह अनजाने में हुई हो। अब, हम इस पर थोड़ी देर बाद और विस्तार से जवाब देंगे, लेकिन मुझे लगता है कि इस बिंदु पर यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि, जैसा कि कई लोगों ने देखा है, ऐसा लगता है कि यह सादृश्य केवल बलात्कार के परिणामस्वरूप होने वाली गर्भावस्था पर लागू होता है।

यह यहाँ सबसे सटीक सादृश्य प्रतीत होता है। यदि किसी को बिना किसी कार्रवाई के इस व्यक्ति का समर्थन करने के लिए मजबूर किया जाता है, तो यह बलात्कार के समान होगा, लेकिन इस विचार प्रयोग के संबंध में अन्य मुद्दे भी हैं जिनके बारे में हम बाद में बात करेंगे। लेकिन थॉम्पसन के पास लोगों के बीजों के बारे में एक और विचार प्रयोग है।

इसलिए, वह हमें हमारी स्थिति से बहुत अलग एक ऐसी स्थिति की कल्पना करने के लिए कहती है जहाँ ये छोटे अदृश्य बीज हैं जो हवा में तैरते हैं। और वे ऐसे हैं कि अगर वे कालीन या असबाब पर गिरते हैं, तो एक मानव व्यक्ति अंकुरित होना शुरू हो जाएगा, एक व्यक्ति का पौधा। इस काल्पनिक दुनिया में, लोगों के पौधों को आपके फर्नीचर या आपके फर्श पर बढ़ने से रोकने के लिए, ये महीन जालियाँ हैं जिन्हें लोग अपनी खिड़कियों पर लगाते हैं जो केवल अर्ध-पारगम्य हैं।

और बीज शायद ही कभी आगे बढ़ पाते हैं। 99% संभावना है कि बीज को रोका जाएगा, लेकिन शायद 1% संभावना है कि बीज आगे बढ़ जाए। और अगर यह संयोग से आपके कालीन या आपके असबाब में लग जाता है, तो एक मानव पौधा उग सकता है।

अब, मान लीजिए कि एक महिला अपार्टमेंट में रहती है, और वह अपनी खिड़कियों पर लगी जाली को बनाए रखने के बारे में बहुत सतर्क रहती है, लेकिन वह हमेशा अपनी खिड़कियां बंद नहीं रखती। उसे समय-समय पर थोड़ी ताजी हवा का आनंद लेना पसंद है, इसलिए वह अपनी खिड़कियां खोलती है; जाली तो वहाँ है, लेकिन एक बीज उसमें से निकल जाता है, और कालीन में जड़ जमा लेता है। वह कुछ हफ्तों के बाद देखती है, ओह, वहाँ एक मानव पौधा उग रहा है।

मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था। मैंने उस बीज को अपने अपार्टमेंट में पनपने से रोकने के लिए अपना पूरा प्रयास किया, इसलिए मैं उसे उखाड़ फेंकने जा रहा हूँ। थॉम्पसन का मानना है कि यह बिल्कुल तर्कसंगत दृष्टिकोण है, और इस तथ्य के बावजूद कि वह एक वास्तविक व्यक्ति है जो उस महिला के अपार्टमेंट में बड़ा हो रहा था, वह अभी भी उसे उखाड़ सकती है।

उसने ऐसा होने से रोकने के लिए अपना पूरा प्रयास किया, लेकिन ऐसा हुआ, इसलिए उसे अभी भी उस व्यक्ति के पौधे को उखाड़ने का अधिकार है। और इसलिए यह निश्चित रूप से कुछ प्रकार के जन्म नियंत्रण के उपयोग के समान होगा, उदाहरण के लिए, गोली, जो गर्भाशय की दीवार पर निषेचित अंडे के आरोपण को रोकने में अत्यधिक प्रभावी है। यदि कोई महिला उन परिस्थितियों में खुद को गर्भवती पाती है, तो उसे गर्भपात का अधिकार होना चाहिए, ठीक उसी तरह जैसे अपार्टमेंट में रहने वाली महिला को उस व्यक्ति के पौधे को उखाड़ने का अधिकार है।

इसलिए, वह तर्क देती है कि हमारा यह कर्तव्य नहीं है कि हम अच्छे समरिटन या शानदार समरिटन बनें, जो कि किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन करेगा जो वायलिन वादक से जुड़ा रहता है। यह किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन करेगा जो अपने अपार्टमेंट में व्यक्ति को पौधा उगाने देता है, हालाँकि उसने इसे रोकने की कोशिश की। हमारा कर्तव्य है कि हम, जैसा कि वह कहती है, न्यूनतम सभ्य समरिटन बनें, लेकिन न्यूनतम सभ्य समरिटन व्यक्ति को पौधे को जीवित रहने या वायलिन वादक को जुड़े रहने की अनुमति देने के लिए बाध्य नहीं है।

इसलिए वह 1960 के दशक के इस मामले के बारे में बात करती है, जिसमें किट्टी जेनोविस नाम की एक महिला को उसके अपार्टमेंट परिसर के बाहर किसी ने पीटा था, एक आदमी ने उसे बार-बार चाकू मारा था, और वह शायद 10, 15 मिनट तक मदद के लिए चिल्लाती रही। वहाँ कम से कम कई दर्जन, या 50 या 60 लोग थे जिन्होंने उसकी चीख सुनी, और किसी ने पुलिस को नहीं बुलाया। आखिरकार, वह अपनी चोटों के कारण मर गई।

यह एक प्रसिद्ध मामला है क्योंकि यह लोगों द्वारा इसमें शामिल न होने का एक दुखद उदाहरण है, जिसके परिणामस्वरूप एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई, जिसे आसानी से बचाया जा सकता था यदि कोई अधिकारियों को बुला लेता। वे घटनास्थल पर पहुँच सकते थे और कम से कम उसे चाकू मारे जाने के बाद बचा सकते थे, यदि कुछ चाकू घोंपने की घटनाओं को रोका नहीं जा सकता था। इसलिए, एक मामूली सभ्य व्यक्ति ने वहाँ फ़ोन कॉल किया होगा।

अगर आप सिर्फ़ एक फ़ोन कॉल करते हैं तो आपको खुद को ख़तरे में डालने की ज़रूरत नहीं है। तो यह न्यूनतम सभ्य है। और कानून, अच्छे सामरी कानून, जिसके तहत लोगों को किसी को महत्वपूर्ण नुकसान से बचाने के लिए मदद करने की आवश्यकता होती है, जो किसी व्यक्ति को बहुत ज़्यादा परेशानी में नहीं डालते हैं, जैसे कि एक छोटे बच्चे को एक फुट पानी में डूबने से बचाना, इसे पहचानते हैं।

आपका कर्तव्य है कि आप न्यूनतम सभ्य व्यवहार करें। बच्चे को पानी से बाहर निकालने में मदद करने से आप किसी तरह की परेशानी में नहीं पड़ेंगे या आपको कोई खतरा नहीं होगा। इसलिए, ऐसे कानून होना उचित है।

लेकिन थॉम्पसन के अनुसार, गर्भपात कानूनों में गर्भपात को निर्धारित करने या प्रतिबंधित करने की समस्या यह है कि यह मूल रूप से किसी पर अत्यधिक बोझ डालता है, जब उसने गर्भवती होने से बचने के लिए उचित परिश्रम किया हो। तो, हम यहाँ थॉम्पसन के तर्कों के बारे में क्या कह सकते हैं? एक बात जो हम कह सकते हैं वह यह है कि किसी के भ्रूण को जीवित रहने देना न्यूनतम रूप से सभ्य है। भले ही जन्म नियंत्रण के माध्यम से गर्भावस्था को रोकने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हों, अगर यह एक वास्तविक मानव व्यक्ति है जो महिला के अंदर विकसित हो रहा है, तो क्या उस व्यक्ति की जान न लेना न्यूनतम रूप से सभ्य नहीं है? क्या यह वास्तव में वीरतापूर्ण है? इसलिए, कोई यह सवाल कर सकता है कि क्या गर्भावस्था को जारी रखना वास्तव में आपका कर्तव्य या दायित्व है।

यह कोई अतिशयोक्तिपूर्ण कार्य नहीं है, जैसा कि थॉम्पसन कहते हैं। यह कर्तव्य की पुकार से ऊपर या परे नहीं है। यह आपका कर्तव्य है।

लोगों के बीज के सादृश्य के संबंध में, कुछ लोगों ने इस तरह से विरोध किया है और कहा है कि थॉम्पसन ने यहाँ जो किया है वह गलत तरीके से सेक्स की तुलना करना है, जो एक अत्यधिक अंतरंग क्रिया है, जो कि आराम से ताज़ी हवा में साँस लेने से है। यह गलत तरीके से यह भी सुझाव देता है कि प्रजनन भी इसी तरह की निष्क्रिय चीज़ है, जो कि ऐसा नहीं है, सिवाय उन दुर्लभ

मामलों के जहाँ कोई गर्भवती हो जाती है। बलात्कार के मामले में, यह शामिल दोनों लोगों की ओर से एक सहमतिपूर्ण कार्य है।

तो, वहाँ उनके विचार प्रयोग में एक तरह का भ्रामक आयाम है। तो थॉम्पसन अपने तर्कों में यही है, और हम जल्द ही उस पर फिर से विचार करेंगे, विशेष रूप से उनके वायलिन वादक तर्क पर, और हम उस पर आपत्ति देखेंगे।

दूसरा, मैरिएन वॉरेन का तर्क है, जो भी प्रसिद्ध है और थॉम्पसन के तर्क से अलग दृष्टिकोण रखता है।

वॉरेन इस विचार को चुनौती देती हैं कि भ्रूण व्यक्ति हैं और निष्कर्ष निकालती हैं कि भ्रूण को जीवन का कोई अधिकार नहीं है। और यह आजकल प्रो-चाँडिस समर्थकों द्वारा तर्क देने का अधिक सामान्य तरीका है। उनका मूल तर्क यह है कि सभी और केवल व्यक्तियों के पास नैतिक अधिकार हैं।

भ्रूण व्यक्ति नहीं हैं। इसलिए, भ्रूण के पास कोई नैतिक अधिकार नहीं है। यह एक बुनियादी तर्क है, यहाँ न्याय-सिद्धांत, जो मान्य है।

यदि यह सच है कि सभी और केवल व्यक्तियों के पास नैतिक अधिकार हैं और भ्रूण व्यक्ति नहीं हैं, तो इसका अर्थ यह है कि भ्रूण के पास कोई नैतिक अधिकार नहीं हैं। अब, विवादास्पद आधार दूसरा है, यह विचार कि भ्रूण व्यक्ति नहीं हैं। वॉरेन इसका बचाव कैसे करती हैं? वह आम तौर पर एक व्यक्ति को नैतिक समुदाय के सदस्य के रूप में परिभाषित करती हैं और तर्क देती हैं कि भ्रूण नैतिक समुदाय के सदस्य के रूप में योग्य नहीं हैं।

वह इस बारे में हमारे अंतर्ज्ञान को बढ़ाने के लिए अपने स्वयं के विचार प्रयोग का भी उपयोग करती है। मान लीजिए कि आपके पास ये अंतरिक्ष यात्री हैं, और वे किसी दूसरे ग्रह पर उतरते हैं और इन चलती हुई चीज़ों का सामना करते हैं जो अजीब आकार की हैं। और वे अजीब आवाज़ें, बीप और सीटी बजाते हैं।

और ऐसा लगता है कि वे जानबूझकर इधर-उधर घूम रहे हैं। लेकिन अंतरिक्ष यात्रियों को ये निकाय इतने अजीब लगते हैं कि उन्हें यकीन नहीं होता कि वे व्यक्ति हैं या नहीं। तो, सवाल यह है, और वॉरेन हमसे पूछते हैं, उन्हें किस तरह के सवाल पूछने चाहिए या वे पूछेंगे यह निर्धारित करने के लिए कि क्या ये अजीब निकाय व्यक्ति हैं या नैतिक समुदाय के सदस्य हैं? आप यह पता लगाने के लिए किस तरह की चीज़ों की तलाश करेंगे कि क्या किसी दूसरे ग्रह पर आपका सामना हुआ कोई अजीब प्राणी कोई व्यक्ति था? वह प्रस्ताव करती है कि ये ऐसी चीज़ें हैं जिनकी वे तलाश करेंगे और जिन्हें आप और मैं तलाशेंगे।

हम पूछेंगे, क्या वे सचेत हैं? क्या उनमें जागरूकता का कोई स्तर है? क्या वे तर्क कर सकते हैं? क्या कोई स्व-प्रेरित गतिविधि है? क्या उनमें संवाद करने की क्षमता है? और क्या उनमें आत्म-अवधारणाएँ हैं? क्या उनमें आत्म-अवधारणाएँ हैं? इसलिए वह सुझाव देती हैं कि ये ऐसी विशेषताएँ हैं जिन्हें हमें किसी भी मामले में देखने की ज़रूरत है ताकि यह पता लगाया जा सके

कि कोई भी इकाई एक व्यक्ति है, नैतिक समुदाय का सदस्य है जिसके पास अधिकार हैं। इसलिए, इन पाँच मानदंडों में से, वह कहती हैं कि इनमें से पहला और दूसरा, और संभवतः तीसरा, व्यक्तित्व के लिए आवश्यक है। यह चेतना, तर्क और शायद स्व-प्रेरित गतिविधि होगी।

लेकिन वह जो प्रस्ताव दे रही है वह यह है कि एक व्यक्ति होने के लिए कम से कम आपको सचेत होना चाहिए और तर्क करने की क्षमता होनी चाहिए। और अगर ऐसा है, अगर ये आवश्यक शर्तें हैं, और उनका मानना है कि ये व्यक्तित्व के लिए संभवतः पर्याप्त शर्तें भी हैं, तो कोई भी प्राणी जिसमें इनमें से कोई भी गुण नहीं है, वह व्यक्ति नहीं हो सकता। जैसा कि पता चलता है, भ्रूण इनमें से किसी भी मानदंड को पूरा नहीं करता है।

इसलिए, भ्रूण सचेत नहीं होते, वे तर्क नहीं कर सकते, उनमें कोई स्व-प्रेरित गतिविधि नहीं होती, उनमें संवाद करने की क्षमता नहीं होती, और उनमें कोई आत्म-अवधारणा नहीं होती। ये सभी चीजें मानव विकास में बाद में आती हैं, वास्तव में, जन्म से बहुत बाद में। इसलिए, उनका निष्कर्ष यह है कि भ्रूण को जीवन का कोई अधिकार नहीं है, और इसलिए महिलाओं को किसी भी मामले में गर्भपात कराने का अधिकार है।

अब, यह फिर से एक बहुत ही प्रभावशाली तर्क है। आलोचना के तौर पर यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि यह तर्क अवांछित शिशुओं की हत्या की अनुमति देता है। यदि कोई शिशु, एक नवजात शिशु, तर्क नहीं कर सकता, संवाद नहीं कर सकता, उसके पास आत्म-अवधारणाएँ नहीं हैं, और वहाँ कोई आत्म-प्रेरित गतिविधि नहीं है, तो वह इन मानदंडों को विफल कर देता है।

भले ही बुनियादी जागरूकता या चेतना हो, जिसके बारे में मुझे लगता है कि वह कहेंगी कि नवजात शिशु के लिए भी यह संदिग्ध है। लेकिन वह अपने लेख में इस पर जोर देती हैं, जिसे उन्होंने 70 के दशक की शुरुआत में लिखा था, जिसमें उन्होंने यह तर्क प्रस्तुत किया था। वह मानती हैं कि, ठीक है, कुछ परिस्थितियों में शिशुहत्या स्वीकार्य होगी, लेकिन वह कहती हैं कि हमें इसके बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि, अधिकांश मामलों में अगर माता-पिता बच्चे को नहीं चाहते हैं, तो कोई और चाहता है।

इसलिए, अब यह अन्य लोगों के लिए चिंता का विषय है कि बच्चा गर्भ से बाहर है, और बच्चे को जीवित रखने में उनकी रुचि महत्वपूर्ण है। आपके पास ऐसे लोग हैं जो गोद लेना चाहते हैं, और इसी तरह। इसलिए, वह अनिवार्य रूप से कहती है कि हमें उन कारणों से शिशुहत्या के बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है, शिशुहत्या उनके दृष्टिकोण का एक तार्किक परिणाम है।

दूसरा, उसका अंतरिक्ष यात्री चित्रण बहुत ही सूक्ष्म तरीके से भ्रामक है। मुझे लगता है कि वह पर्याप्त शर्तों को व्यक्तित्व के लिए आवश्यक शर्तों के साथ भ्रमित करती है। इसलिए, एक आवश्यक शर्त और एक पर्याप्त शर्त के बीच अंतर को स्पष्ट करने के लिए,

यदि x की अनुपस्थिति में y मौजूद नहीं हो सकता है, तो $x \rightarrow y$ के लिए एक आवश्यक शर्त है। यदि x की अनुपस्थिति में y मौजूद नहीं हो सकता है, तो $x \rightarrow y$ के लिए एक आवश्यक शर्त है। इसलिए, हम कहेंगे कि दहन के लिए ऑक्सीजन एक आवश्यक शर्त है। इसका मतलब यह है कि

ऑक्सीजन की उपस्थिति के बिना, आप दहन नहीं कर सकते। यदि x , y की उपस्थिति की गारंटी देता है, तो x , y के लिए एक पर्याप्त शर्त है। इसलिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में पैदा होना अमेरिकी नागरिकता के लिए एक पर्याप्त शर्त है।

यह कोई ज़रूरी शर्त नहीं है। आप एक अमेरिकी नागरिक के रूप में स्वाभाविक रूप से पंजीकृत हो सकते हैं। आपको अमेरिका में पैदा होने की ज़रूरत नहीं है, लेकिन अगर आप संयुक्त राज्य अमेरिका में पैदा हुए हैं, तो यह आपके अमेरिकी नागरिक होने के लिए पर्याप्त शर्त है।

यह गारंटी देता है कि आप एक अमेरिकी नागरिक हैं। इसलिए वॉरेन के तर्क पर वापस जाने के लिए, सिर्फ इसलिए कि चेतना, तर्क, आत्म-अवधारणा, स्व-प्रेरित गतिविधि और संवाद करने की क्षमता के ये मानदंड या विशेषताएँ, सिर्फ इसलिए कि व्यक्तित्व के लिए पर्याप्त परिस्थितियाँ हैं, और इससे हमें यह निष्कर्ष निकालने का आधार मिलता है कि दूसरे ग्रह पर पाए गए ये निकाय व्यक्ति हैं, इसका यह मतलब नहीं है कि वे व्यक्तित्व के लिए आवश्यक परिस्थितियाँ हैं, कि आपको व्यक्ति होने के लिए उनका होना ज़रूरी है। इसलिए, इस कारण से उनका तर्क समस्याग्रस्त है।

और फिर, अंत में, मानव और व्यक्ति के बीच उसका भेद अपने आप में संदिग्ध है। और यह आजकल गर्भपात की चर्चाओं में एक बहुत ही आम धारणा है। लोग इसे हल्के में लेंगे, यहाँ तक कि कट्टर समर्थक भी, कि, ठीक है, हम मानव होने और व्यक्ति होने के बीच भेद कर सकते हैं, कि यह एक उचित भेद है।

लेकिन हम इसे चुनौती दे सकते हैं। कौन कहता है कि व्यक्ति मानव की उपश्रेणी है? क्या यह इसके विपरीत नहीं हो सकता? क्या होगा अगर मनुष्य व्यक्ति की उपश्रेणी है? आखिरकार, अन्य प्रकार के व्यक्ति भी हैं। ईश्वर एक व्यक्ति है।

देवदूत प्राणी व्यक्ति हैं, और वे मनुष्य नहीं हैं। और कौन जानता है कि अगर सी.एस. लुईस सही हैं तो भगवान ने ब्रह्मांड में और किस तरह के व्यक्ति बनाए होंगे। वहाँ बुद्धिमान जीवन है।

वे दैवीय छवि वाले भी हो सकते हैं, और हम इसकी कल्पना कर सकते हैं। तो शायद एक इंसान वास्तव में एक व्यक्ति की उपश्रेणी है, जिस स्थिति में, अगर हम जानते हैं कि कोई व्यक्ति एक इंसान है, तो हम जानते हैं कि वह एक व्यक्ति है क्योंकि वह इंसान है। और अगर ऐसा है, तो विकास के किसी भी बिंदु पर किसी भी महिला के गर्भ में कोई भी इंसान, इसलिए एक व्यक्ति होगा।

तो ये गर्भपात के पक्ष में दो प्रमुख तर्क हैं, गर्भपात पर बहस के इतिहास में दो सबसे प्रभावशाली तर्क, जूडिथ जार्विस थॉम्पसन और मैरिएन वॉरेन की ओर से, और ये कुछ महत्वपूर्ण जवाब हैं जो मुझे लगता है कि मददगार हैं। अगले व्याख्यान में, हम जीवन के पक्ष में तर्क, दार्शनिक और धार्मिक के बारे में बात करेंगे।

यह डॉ. जेम्स एस. स्पीगल द्वारा ईसाई नैतिकता पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 10, गर्भपात, भाग 1 है।